अमीरे अहले सुन्नत की किताब "आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें" से लिये गए मवाद की छटी क़िस्त

Shohrat Ki Khwahish (Hindi)

शोहरत की ख़्वाहिश

कुल सफ़हात 29

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी दامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

शोहरत की ख़्वाहिश

येह रिसाला **(शोहरत की ख़्वाहिश)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

यह मज़्मून ''आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात'' के सफ़्हा 102 ता 130 से लिया गया है।

शोहरत की ख़्वाहिश

दुआ़ए अ़त्तार

मौलाए करीम! जो कोई रिसाला ''**शोहरत की ख़्वाहिश**'' के 29 सफ़ह़ात पढ़ या सुन ले, उस के दिल से शोहरत की ख़्वाहिश निकाल कर उसे ख़ुलूस व आ़जिज़ी का पैकर बना दे और सदा के लिये उस से राज़ी हो जा। اٰمین

अ़जीब अन्दाज़ में नफ़्स की गिरिफ़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद मुर्तइश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''मैं ने बहुत से **ह़ज** किये और इन में से अक्सर सफ़रे ह़ज किसी क़िस्म का ज़ादे राह लिये बिग़ैर किये। फिर मुझ पर आश्कार (या'नी ज़ाहिर) हुवा कि येह सब तो मेरे नफ़्स का धोका था क्यूंकि एक मरतबा मेरी मां ने मुझे पानी का घड़ा भर कर लाने का हुक्म दिया तो मेरे नफ़्स पर उन का हुक्म गिरां (या'नी बोझ) गुज़रा, चुनान्चे मैं ने समझ लिया कि **सफ़रे ह़ज** में मेरे नफ़्स ने मेरी मुवाफ़क़त फ़क़त़ अपनी लज़्ज़त के लिये की और मुझे धोके में रखा क्यूंकि अगर मेरा नफ़्स फ़ना हो चुका होता तो आज एक ह़क़्क़े शरई पूरा करना (या'नी मां की इत़ाअ़त करना) इसे (या'नी नफ़्स को) बेह़द दुश्वार क्यूं मह़सूस होता।'' (الرسالۃ القشیریۃ، ص۱۳۵)

हुब्बे जाह की लज़्ज़त इ़बादत की मशक़्क़त आसान कर देती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن कैसी **मदनी सोच** रखते और किस क़दर आ़जिज़ी के ख़ूगर होते हैं। बा'ज़ों की आ़दत होती है, कि वोह आ़म लोगों से तो झुक झुक कर मिलते और उन के लिये बिछ बिछ जाते हैं मगर वालिदैन, भाई बहनों और बाल बच्चों के साथ उन का रविय्या जारिह़ाना, ग़ैर अख़्लाक़ी और बसा अवक़ात सख़्त दिल आज़ार होता है। क्यूं ? इस लिये कि अ़वाम में उ़म्दा अख़्लाक़ का मुज़ाहिरा मक़्बूलिय्यते आ़म्मा का बाइ़स बनता है जब कि घर में हुस्ने सुलूक करने से इ़ज़्ज़तो शोहरत मिलने की ख़ा़स उम्मीद नहीं होती ! इस लिये येह लोग अ़वाम में ख़ूब मीठे मीठे बने रहते हैं ! इसी त़रह़ जो इस्लामी भाई बा'ज़ मुस्तह़ब कामों के लिये बढ़ चढ़ कर क़ुरबानियां पेश करते मगर फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी में कोताहियां बरतते हैं मसलन मां बाप की इत़ाअ़त, बाल बच्चों की शरीअ़त के मुत़ाबिक़ तर्बिय्यत और ख़ुद अपने लिये **फ़र्ज़ उ़लूम** के ह़ुसूल में ग़फ़्लत से काम लेते हैं उन के लिये भी इस **ह़िकायत** में इ़ब्रत के निहायत अहम **मदनी फूल** हैं। ह़क़ीक़त येह है कि जिन नेक कामों में ''शोहरत मिलती और वाह वाह ! होती है'' वोह दुश्वार होने के बा वुजूद ब आसानी सरअन्जाम पा जाते हैं **क्यूंकि हुब्बे जाह** (या'नी शोहरतो इ़ज़्ज़त की चाहत) **के सबब मिलने वाली लज़्ज़त बड़ी से बड़ी मशक़्क़त आसान कर देती है**। याद रखिये ! ''हुब्बे जाह'' में हलाकत ही हलाकत है। इ़ब्रत के लिये दो **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

《1》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़ाअ़त (या'नी इ़बादत) को बन्दों की त़रफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ की मह़ब्बत से मिलाने से बचते रहो, कहीं तुम्हारे आ'माल बरबाद न हो जाएं। (فردوس الاخبار ج١ ص ٢٢٣ حديث ١٥٦٧) 《2》 दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में इतनी तबाही नहीं मचाते जितनी तबाही **हुब्बे मालो जाह** (या'नी मालो दौलत और इ़ज़्ज़तो शोहरत की मह़ब्बत) मुसलमान के **दीन** में मचाती है। (ترمذی ج٤ ص١٦٦ حدیث ٢٣٨٣)

हुब्बे जाह के मुतअ़ल्लिक़ अहम तरीन मदनी फूल

"हुब्बे जाह" के तअ़ल्लुक़ से एह़याउल उ़लूम की जिल्द 3 सफ़्ह़ा 616 ता 617 को सामने रख कर कुछ **मदनी फूल** पेशे ख़िदमत हैं : "(हुब्बे जाहो रिया) नफ़्स को हलाक करने वाले आख़िरी उमूर और बात़िनी मक्रो फ़रेब से है, इस में उ़लमा, इ़बादत गुज़ार और आख़िरत की मन्ज़िल तै़ करने वाले लोग मुब्तला किये जाते हैं, इस त़रह़ कि येह ह़ज़रात बसा अवक़ात ख़ूब कोशिशें कर के इ़बादात बजा लाने, नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाने बल्कि शुबुहात से भी ख़ुद को बचाने में काम्याब हो जाते हैं, अपने आ'ज़ा को ज़ाहिरी गुनाहों से भी बचा लेते हैं मगर अ़वाम के सामने अपने नेक कामों, दीनी कारनामों और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये की जाने वाली काविशों जैसे कि मैं ने येह किया, वोह किया, वहां बयान था, यहां बयान है, बयानात (करने या ना'त पढ़ने) के लिये इतनी इतनी तारीख़ें "बुक" हैं, मदनी मश्वरे में रात इतने बज गए और आराम न मिलने की थकन है इसी लिये आवाज़ बैठी हुई है। "मदनी क़ाफ़िले में सफ़र है, इतने इतने मदनी क़ाफ़िलों में या मदनी कामों के लिये फ़ुलां फ़ुलां शहरों,

मुल्कों का सफ़र कर चुका हूं वग़ैरा वग़ैरा के इज़्हार के ज़रीए अपने नफ़्स की राह़त के त़लबगार होते हैं, अपना इल्मो अ़मल ज़ाहिर कर के मख़्लूक़ के यहां मक़्बूलिय्यत और उन की त़रफ़ से होने वाली अपनी ता'ज़ीमो तौक़ीर, वाह वाह और इ़ज़्ज़त की **लज़्ज़त** ह़ासिल करते हैं, जब मक़्बूलिय्यत व शोहरत मिलने लगती है तो उस का नफ़्स चाहता है कि इल्मो अ़मल लोगों पर ज़ियादा से ज़ियादा ज़ाहिर होना चाहिये ताकि और भी इ़ज़्ज़त बढ़े लिहाज़ा वोह अपनी नेकियों, इ़ल्मी सलाहिय्यतों के तअ़ल्लुक़ से मख़्लूक़ की इत्तिलाअ़ के मज़ीद रास्ते तलाश करता है और **ख़ालिक़** عَزَّوَجَلَّ के जानने पर कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मेरे आ'माल से बा ख़बर है और मुझे अज्र देने वाला है क़नाअ़त नहीं करता बल्कि इस बात पर खुश होता है कि लोग उस की **वाह वाह और ता'रीफ़** करें और **ख़ालिक़** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ह़ासिल होने वाली ता'रीफ़ पर क़नाअ़त नहीं करता, **नफ़्स** येह बात ब ख़ूबी जानता है कि लोगों को जब इस बात का इ़ल्म होगा कि फ़ुलां बन्दा नफ़्सानी ख़्वाहिशात का तारिक है, शुबुहात से बचता है, राहे ख़ुदा में ख़ूब पैसे ख़र्च करता है, इ़बादात में सख़्त मशक़्क़त बर्दाश्त करता है ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा में ख़ूब आहो ज़ारी करता और आंसू बहाता है, मदनी कामों की ख़ूब धूमें मचाता है, लोगों की इस्लाह़ के लिये बहुत दिल जलाता है, ख़ूब मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करता कराता है, ज़बान, आंख और पेट का **क़ुफ़्ले मदीना** लगाता है, रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत के इतने इतने दर्स देता है, मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान), सदाए मदीना, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत का बड़ा ही पाबन्द है तो उन (लोगों) की ज़बानों पर उस (बन्दे) की ख़ूब ता'रीफ़ जारी होगी, वोह उसे इ़ज़्ज़तो एह़तिराम की निगाह से देखेंगे,

www.dawateislami.net

उस की मुलाक़ात और ज़ियारत को अपने लिये बाइसे सआदत और सरमायए आख़िरत समझेंगे, हुसूले बरकत के लिये मकान या दुकान पर "दो क़दम" रखने, चल कर दुआ फ़रमा देने, चाय पीने, दा'वते त़आम क़बूल करने की निहायत लजाजत के साथ दरख़्वास्तें करेंगे, इस की राय पर चलने में दो जहां की भलाई तसव्वुर करेंगे, उसे जहां देखेंगे ख़िदमत करेंगे और सलाम पेश करेंगे, इस का झूटा खाने पीने की ह़िर्स करेंगे, उस का तोह़्फ़ा या उस के हाथ से मस की हुई चीज़ पाने में एक दूसरे पर सबक़त करेंगे, उस की दी हुई चीज़ चूमेंगे, उस के हाथ पाऊं के बोसे लेंगे, एह़तिरामन "ह़ज़रत ! हुज़ूर ! या सय्यिदी !" वग़ैरा अल्क़ाब के साथ ख़ाशिआना अन्दाज़ और आहिस्ता आवाज़ में बात करेंगे, हाथ जोड़ कर सर झुका कर दुआओं की इल्तिजाएं करेंगे, मजालिस में उस की आमद पर ता'ज़ीमन खड़े हो जाएंगे, उसे अदब की जगह बिठाएंगे, उस के आगे हाथ बांध कर खड़े होंगे, उस से पहले खाना शुरूअ़ नहीं करेंगे, आ़जिज़ाना अन्दाज़ में तोह़्फ़े और नज़राने पेश करेंगे। तवाज़ोअ़ करते हुए उस के सामने अपने आप को छोटा (मसलन ख़ादिमो ग़ुलाम) ज़ाहिर करेंगे, ख़रीदो फ़रोख़्त और मुआ़मलात में उस से मुरव्वत बरतेंगे, उस को चीज़ें उ़म्दा क्वॉलिटी की और वोह भी सस्ती या मुफ़्त देंगे। उस के कामों में उस की इ़ज़्ज़त करते हुए झुक जाएंगे। **लोगों के इस त़रह़ के अ़क़ीदत भरे अन्दाज़ से नफ़्स को बहुत ज़ियादा लज़्ज़त ह़ासिल होती है और येह वोह लज़्ज़त है जो तमाम ख़्वाहिशात पर ग़ालिब है,** इस त़रह़ की अ़क़ीदत मन्दियों की लज़्ज़तों के सबब गुनाहों का छोड़ना उसे मा'मूली बात मा'लूम होती है क्यूंकि "हुब्बे जाह" के मरीज़ को नफ़्स गुनाह करवाने के बजाए उल्टा समझाता

है कि देख गुनाह करेगा तो अ़क़ीदतमन्द आंखें फैर लेंगे ! लिहाज़ा नफ़्स के तआ़वुन से मो'तक़िदीन में अपना वक़ार बर क़रार रखने के जज़्बे के सबब इबादत पर इस्तिक़ामत की शिद्दत उस को नर्मी व आसानी मह़सूस होती है क्यूंकि वोह बातिनी तौर पर लज़्ज़तों की लज़्ज़त और तमाम शहवतों (या'नी ख़्वाहिशात) से बड़ी शहवत (या'नी अ़वाम की अ़क़ीदत से ह़ासिल होने वाली लज़्ज़त) का इदराक (या'नी पहचान) कर लेता है, वोह इस ख़ुश फ़हमी में पड़ जाता है कि मेरी ज़िन्दगी **अल्लाह** तआ़ला के लिये और उस की मर्ज़ी के मुताबिक़ गुज़र रही है, ह़ालांकि उस की ज़िन्दगी उस पोशीदा (हुब्बे जाह या'नी अपनी वाह वाह चाहने वाली छुपी) ख़्वाहिश के तह़त गुज़रती है जिस के इदराक (या'नी समझने) से निहायत मज़्बूत अ़क़्लें भी आ़जिज़ो बेबस हैं, वोह इबादते ख़ुदावन्दी में अपने आप को मुख़्लिस और ख़ुद को **अल्लाह** तआ़ला के मह़ारिम (ह़राम कर्दा मुआ़मलात) से इजतिनाब (या'नी परहेज़) करने वाला समझ बैठता है ! ह़ालांकि ऐसा नहीं, बल्कि वोह तो बन्दों के सामने ज़ैबो ज़ीनत और तसन्नुअ़ (या'नी बनावट) के ज़रीए ख़ूब **लज़्ज़तें** पा रहा है, उसे जो इ़ज़्ज़त व शोहरत मिल रही है इस पर बड़ा ख़ुश है । **इस त़रह़ इबादतों और नेक कामों का सवाब ज़ाएअ़ हो जाता है और उस का नाम मुनाफ़िक़ों की फ़ेह़रिस्त में लिखा जाता है और वोह नादान येह समझ रहा होता है कि उसे अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का क़ुर्ब ह़ासिल है ।**

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते हो

कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही (वसाइले बख़्शिश, स.78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनने वाले हाजियों के लिये मदनी फूल

बा 'ज़ मालदार बार बार ह़जो उ़मरह को जाते, इस की गिनती ख़ूब याद रखते, बारहा बिग़ैर ज़रूरत बे पूछे लोगों को अपने ह़जो उमरह की ता'दाद बताते और सफ़रे मदीना के "कारनामे" सुनाते हैं उन को एह़सास तक नहीं होता कि कहीं रियाकारी की तबाहकारी में न जा पड़ें। **ह़त़ीम** शरीफ़ का दाख़िला भी ह़ालांकि ऐन का'बए मुशर्रफ़ा ही का दाख़िला है जो हर एक को नसीब हो सकता है मगर इस का तज़किरा कोई नहीं करता और अगर किसी को दरवाज़ए का'बा के अन्दर दाख़िला या किसी मुल्क के सर बराह के साथ सुन्हरी जालियों के अन्दर ह़ाज़िरी की सआ़दत मिल जाए तो अपने मुंह से अपने फ़ज़ाइल बयान करते नहीं थकता। इसी त़रह़ बा'ज़ लोग अपने फ़ज़ाइल इस त़रह़ बयान करते भी सुनाई देते हैं कि साह़िब ! वहां तो हम ने जो मांगा वोह मिला, हर तमन्ना पूरी हुई, फ़ुला की मुलाक़ात की ख़्वाहिश हुई थोड़ी ही देर में मिल गए वग़ैरा। इस त़रह़ अपने मुंह "मियां मिठ्ठू" बन कर येह लोग समझते होंगे कि हमारा वक़ार बुलन्द होगा ह़ालांकि ऐसा होना ज़रूरी नहीं, हो सकता है बा'ज़ लोग इस का मत़लब येह भी लेते हों कि "येह ह़ाजी साह़िब" मक़ामाते मुक़द्दसा की अ़ज़मत के बयान के साथ साथ अपनी "करामत" भी सुना रहे हैं ! हां बत़ौरे तह़दीसे ने'मत या दूसरों को रग़बत दिलाने की निय्यत से अपने ऊपर होने वाले इन्आ़माते इलाहिय्या के तज़किरे में ह़रज नहीं। बहर ह़ाल हर एक को अपनी निय्यत पर ग़ौर कर लेना ज़रूरी है कि मैं फ़ुलां बात क्यूं कहने लगा हूं।

www.dawateislami.net

अगर बताने में आख़िरत की भलाई का पहलू है तो बोले वरना चुप रहे। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : ''जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखते है उसे चाहिये कि भलाई की बात करे या ख़ामोश रहे।'' (بُخاری حدیث۶۰۱۸ ج ٤ ص۱۰۵)

क्या अपने ह़ज्जो उ़मरह की ता'दाद बयान करना गुनाह है ?

अपने ह़ज्जो उ़मरह की ता'दाद बयान करना हर सूरत में गुनाह नहीं, ह़दीसे पाक में है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّیَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है। (بخاری حدیث ا ج ا ص ۲) अगर कोई तह़दीसे ने'मत (या'नी अपने ऊपर ने'मते इलाही की ख़बर देने) के लिये अपने **ह़ज** की ता'दाद बयान करे तो ह़रज नहीं मगर इ़ल्मे दीन और सोह़बते अख़्यार की कमी के बाइ़स फ़ी ज़माना इस्लाहे़ निय्यत बेह़द दुश्वार और रियाकारी का ख़त़रा शदीद। फ़र्ज़ कीजिये ! आप ने बिग़ैर पूछे किसी को बता दिया कि ''मैं ने **दो ह़ज** किये हैं।'' इस पर अगर वोह पूछ बैठे कि जनाब ! मुझे बताने की ज़रूरत कैसे पेश आई ? अब अगर आप ने घबरा कर कह दिया कि तह़दीसे ने'मत (**अल्लाह** तआ़ला की ने'मत का चर्चा करने) के लिये अ़र्ज़ किया है। इस पर हो सकता है कि साइल ख़ामोश हो जाए, मगर ग़ौर फ़रमा लीजिये ! क्या येह कहते वक़्त कि ''मैं ने दो ह़ज किये हैं'' वाक़ेई आप के दिल में तेह़दीसे ने'मत या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत का चर्चा करने की निय्यत थी ? अगर थी फिर तो ठीक वरना झूट के गुनाह का वबाल सर पड़ा और ''दिल में कुछ ज़बान पर कुछ'' की वजह से निफ़ाक़ और

बताते वक़्त अगर مَعَاذَاللہ عَزَّ وَجَلَّ दिल में रिया और दिखावे का इरादा था तो रियाकाराना अ़मल को तेह़दीसे ने'मत में खपाने की "रियाकारी दर रियाकारी" का इल्ज़ाम मज़ीद बर आं। मदनी इल्तिजा है कि ज़बान पर कुफ़्ले मदीना लगाने की कोशिश कीजिये कि ज़बान की ब ज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाली लग़्ज़िश भी जहन्नम में झौंक सकती है !

दो ह़ज ज़ाएअ़ कर दिये

मश्हूर मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی कहीं मदऊ़ थे मेज़बान ने अपने ख़ादिम से कहा : उन बरतनों में खाना खिलाओ जो मैं दूसरी बार के **ह़ज** में लाया हूं, सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने सुन कर फ़रमाया : मिस्कीन ! तू ने एक जुम्ले में **दो ह़ज** ज़ाएअ़ कर दिये ! (احسن الوعاء لآداب الدعاء، ص ۱۵۷)

अ़ता कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत
न नज़्दीक आए रिया या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेकियां छुपाओ

बे ज़रूरत अपने **ह़ज्जो उ़मरह** की ता'दाद, तिलावत कर्दा कुरआने पाक और दुरूदे पाक और दीगर अवराद पढ़ने की गिनती बताने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है। (इख़्लास के मुतलाशी दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का जारी कर्दा बयान का ऑडियो केसेट "नेकियां छुपाओ" ह़ासिल कर के सुनिये) बिला ह़ाजत अपने आप को ह़ाजी, क़ारी, ह़ाफ़िज़ कहने

लिखने वाले भी ग़ौर करें कि वोह **हज** या फ़न्ने क़िराअत या हिफ़्ज़े कुरआने पाक से मुशर्रफ़ होने का बह बांगे दुहुल ए'लान कर के क्या लेना चाह रहे हैं ? हां, लोग अपनी मर्ज़ी से ऐसों को हाजी साहिब, क़ारी साहिब या हाफ़िज़ साहिब कहें तो इस में कोई मुज़ायक़ा नहीं । अलबत्ता बुज़ुर्गों के **हज** की ता'दाद का मुआमला भी इसी त़रह है कि या तो उन के ख़ुद्दाम ने इन को रिवायत किया होगा या तह़दीसे ने'मत के लिये ब ज़बाने ख़ुद इर्शाद फ़रमाया होगा । सरापा इख़्लास बन्दों का मन्शा हरगिज़ नेक नामी या अपनी पारसाई का सिक्का जमाना नहीं होता । यहां येह भी अ़र्ज़ करता चलूं कि अगर कोई ह़ाजी अपने **ह़ज** वग़ैरा की ता'दाद बताए भी तो हमें उसे रियाकार कहने की इजाज़त नहीं क्यूंकि दिलों का ह़ाल रब्बे ज़ुल जलाल जानता है, हम पर लाज़िम है कि हुस्ने ज़न से काम लें ।

﴾77﴿ एक बुज़ुर्ग का शैत़ान से मुकालमा

किसी बुज़ुर्ग ने ह़ज के रोज़ अ़रफ़ात शरीफ़ के मैदान में शैत़ान को ब शक्ले इन्सान इस ह़ाल में देखा कि वोह निहायत कमज़ोर व ज़र्द रू है, उस की पीठ टूटी हुई है और रो रहा है । बुज़ुर्ग के पूछने पर उस ने अपने **रोने** का सबब कुछ यूं बताया कि चूंकि यहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **ह़ाजी** इकठ्ठे हुए हैं, लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को रूस्वा नहीं करेगा, मुझे येह डर है कि कहीं सारे ही बख़्श न दिये जाएं ! अपनी **कमज़ोरी** का सबब उस ने राहे ख़ुदा के मुसाफ़िरों के घोड़ों का हनहनाना बताया और बसद अफ़्सोस कहा कि अगर येह सुवार (या'नी राहे ख़ुदा के

मुसाफ़िर) मेरी पसन्द के (या'नी ग़फ़्लतों और गुनाहों भरे) रास्तों पर होते तो बहुत ख़ूब था। **ज़र्दरूई** या'नी पीला पड़ जाने का सबब उस ने इबादत पर लोगों का एक दूसरे की मदद करना क़रार दिया। उन बुज़ुर्ग ने जब येह पूछा कि तेरी **कमर** क्यूं टूटी हुई है? तो बोला : बन्दा जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करता है : "या **अल्लाह** ! मेरा **ख़ातिमा बिल ख़ैर** फ़रमा" तो मुझे सख़्त सदमा होता है और मेरी ख़्वाहिश होती है कि येह अपने नेक अ़मल को "कुछ" (या'नी बड़ा कारनामा) समझे, इस पर ख़ूब इतराए और फूले ताकि बरबाद हो, मुझे इस बात का ख़ौफ़ आता है कि कहीं इस को येह समझ न आ जाए कि अपने अ़मल पर इतराना नहीं चाहिये बल्कि सिर्फ़ो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़र रखते हुए आ़जिज़ी इख़्तियार करनी चाहिये।

(इह़याउल उ़लूम, जि. 1, स. 322 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾78﴿ बुलन्दी चाहने वाले की रुस्वाई

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में सफ़ा और मरवह के दरमियान एक ख़च्चर सुवार देखा, कुछ ग़ुलाम "हट जाओ ! हट जाओ !!" की आवाज़ें लगा कर उस के सामने से लोगों को हटा रहे थे। कुछ अ़र्से बा'द मुझे वोही शख़्स बग़दाद में लम्बे बाल, नंगे पाऊं और ह़सरत ज़दा नज़र आया, मैं ने हैरत से पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ

क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' जवाब दिया : मैं ने ऐसी जगह (या'नी मक्कए पाक में) ''बुलन्दी'' (बड़ाई) चाही जहां लोग ''आ़जिज़ी'' करते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ऐसी जगह रुस्वा कर दिया जहां लोग बुलन्दी पाते हैं।

(الزواجر عن اقتراف الكبائر ج١ ص ١٦٤)

वोही सर बर सरे महशर बुलन्दी पाएगा जो सर
यहां दुन्या में उन के आस्ताने पर झुका होगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 187)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾79﴿ ह़ज की ख़्वाहिश थी मगर पल्ले ज़र न था

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने एक बार अपने गुलाम मुज़ाह़िम से फ़रमाया : मेरी **ह़ज** की ख़्वाहिश है, क्या तुम्हारे पास कुछ रक़म है ? अ़र्ज़ की : दस दीनार से कुछ ज़ाइद हैं। फ़रमाया : इतनी सी रक़म में **ह़ज** क्यूंकर हो सकता है ! कुछ ही दिन गुज़रे थे कि मुज़ाह़िम ने अ़र्ज़ की : या **अमीरल मोअमिनीन** ! तय्यारी कीजिये, हमें बनू मरवान के माल से 17 हज़ार दीनार (सोने की अशरफ़ियां) मिल गए हैं। फ़रमाया : इन को बैतुल माल में जम्अ़ करवा दो, अगर येह ह़लाल के हैं तो हम ब क़द्रे ज़रूरत ले चुके हैं और अगर ह़राम के हैं तो हमें नहीं चाहिये। मुज़ाह़िम का बयान है कि जब **अमीरुल मोअमिनीन** ने देखा कि येह बात मुझ पर गिरां (ना गवार) गुज़री है तो फ़रमाया : देखो मुज़ाह़िम ! जो काम मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये किया करूं उसे गिरां (बोझ) न समझा करो, मेरा नफ़्स तरक़्क़ी पसन्द और

ख़ूब से ख़ूब तर का मुश्ताक़ (त़लबगार) है, जब भी इसे कोई मर्तबा मिला इस ने फ़ौरन इस से बुलन्दतर मर्तबे के हुसूल की कोशिश शुरूअ़ कर दी, दुन्यावी मनासिब (या'नी ओ़हदों) में से बुलन्दतर मन्सब (या'नी ओ़हदा) ख़िलाफ़त है जो मेरे नफ़्स को ह़ासिल हो चुका है, अब येह सिर्फ़ और सिर्फ़ जन्नत का मुश्ताक़ है।

(سیرت عمر بن عبد العزیز لابن عبد الحکم ص ۵۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आख़िरी उ़म्र है क्या रोनक़े दुन्या देखूं
अब फ़क़त़ एक ही धुन है कि मदीना देखूं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! इस ह़िकायत में उन लोगों के लिये दर्से इ़ब्रत है जो रिश्वत, सूद, जूए, तिजारत में धोका और झूट जैसे ना जाइज़ ज़राएअ़ से दौलत इकठ्ठी करते हैं और इसी में से **ह़ज** कर के समझते हैं कि हम ने बहुत बड़ी काम्याबी ह़ासिल कर ली है। ख़बरदार ! येह काम्याबी नहीं बल्कि ''चोरी और सीना ज़ोरी'' वाला मुआ़मला है और इस का अन्जाम बहुत भयानक है। ह़दीस शरीफ़ में है : जो माले ह़राम ले कर ह़ज को जाता है जब لَبَّیْك कहता है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाता है : न तेरी لَبَّیْك क़बूल, न ख़िदमत पज़ीर (या'नी मन्ज़ूर) और तेरा ह़ज तेरे मुंह पर मरदूद है, यहां तक कि तू येह माले ह़राम कि तेरे क़ब्ज़े में है उस के मुस्तह़िक़ों को वापस दे। (التذکرۃ فی الوعظ لابن جوزی ص ۱۲۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

﴾80﴿ हर दिल अ़ज़ीज़ ख़लीफ़ा

मक़्बूलिय्यत और हर दिल अ़ज़ीज़ी भी एक बहुत बड़ा ए'ज़ाज़ है, हुस्ने अख़्लाक़ और अ़द्लो इन्साफ़ की ब दौलत अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز को येह ह़ासिल था, चुनान्चे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक बार **ह़ज** के मोसिमे बहार में जब **मैदाने अ़रफ़ात** पहुंचे तो लोगों की तवज्जोह का मर्कज़ बन गए। ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैल बिन अबी सालेह़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी उस हुजूम में मौजूद थे, इन्हों ने अपने वालिदे मोह़तरम से अ़र्ज़ की : वल्लाह ! मेरे ख़याल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز से मह़ब्बत फ़रमाता है, वालिद साह़िब ने इस की दलील पूछी तो कहा : लोगों के दिलों में उन की ख़ूब इ़ज़्ज़त है, फिर येह ह़दीसे पाक बयान की, कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) से फ़रमाता है कि मैं फ़ुलां से मह़ब्बत करता हूं तुम भी उस से मह़ब्बत करो चुनान्चे (ह़ज़रत) जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) उस से मह़ब्बत करते हैं, फिर आस्मान वालों में निदा देते (या'नी ए'लान करते) हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़ुलां से मह़ब्बत रखता है तुम लोग भी उस से मह़ब्बत करो, चुनान्चे आस्मान वाले उस से मह़ब्बत करने लगते हैं, इस के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को दुन्या में मक़्बूले आ़म बना देता है। (تاریخ دِ مشق ج ٤٥ ص ١٤٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰه تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

वोह कि इस दर का हुवा ख़ल्के ख़ुदा उस की हुई
वोह कि इस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾81﴿ बुर्क़अ़पोश आ'राबिय्या

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़्ह़ा 339 ता 341 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار इन्तिहाई मुत्तक़ी व परहेज़गार, बेह़द ख़ूबरू और ह़सीन नौ जवान थे। सफ़रे **ह़ज** के दौरान **मक़ामे अब्वा** पर एक बार अपने ख़ैमे (Camp) में तन्हा तशरीफ़ फ़रमा थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का रफ़ीक़े सफ़र खाने का इन्तिज़ाम करने के लिये गया हुवा था। नागाह एक **बुर्क़अ़पोश आ'राबिय्या** (या'नी अ़रब की दीहाती औ़रत) ख़ैमे में दाख़िल हुई और उस ने चेहरे से निक़ाब उठा दिया ! उस का हुस्न बहुत ज़ियादा फ़ित्ना बर्पा कर रहा था ! कहने लगी : मुझे "**कुछ**" दीजिये। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ समझे शायद रोटी मांग रही है। कहने लगी : मैं वोह चाहती हूं जो बीवी अपने शोहर से चाहती है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **ख़ौफ़े ख़ुदा** से लरज़ते हुए फ़रमाया : "तुझे मेरे पास शैत़ान ने भेजा है।" इतना फ़रमाने के बा'द अपना सरे मुबारक घुटनों में रख कर ब आवाज़े बुलन्द रोने लगे। येह मन्ज़र देख कर **बुर्क़अ़पोश आ'राबिय्या** घबरा कर तेज़ तेज़ क़दम उठाए ख़ैमे से बाहर निकल गई। जब रफ़ीक़ (साथी) आया और देखा कि रो रो कर

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आंखें सुजा दीं और गला बिठा दिया है, तो उस ने सबबे गिर्या (या'नी रोने का सबब) दर्याफ़्त किया, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अव्वलन टालम टौल से काम लिया मगर उस के पैहम इसरार पर ह़क़ीक़त का इज़्हार कर दिया तो वोह भी फूट फूट कर रोने लगा। फ़रमाया : तुम क्यूं रोते हो ? अ़र्ज़ की : मुझे तो ज़ियादा रोना चाहिये क्यूंकि अगर आप की जगह मैं होता तो शायद सब्र न कर सकता (या'नी हो सकता है मैं गुनाह में पड़ जाता) दोनों ह़ज़रात رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا रोते रहे यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में ह़ाज़िर हो गए। त़वाफ़ो सई वग़ैरा से फ़ारिग़ होने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ह़जरे अस्वद के पास तशरीफ़ लाए और चादर से घुटनों के गिर्द घेरा बांध कर बैठ गए। इतने में ऊंघ आ गई और आ़लमे ख़्वाब में पहुंच गए, एक हुस्नो जमाल के पैकर, मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र ख़ुश लिबास दराज़ क़द बुज़ुर्ग नज़र आए, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने पूछा : आप कौन हैं ? जवाब दिया : मैं (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नबी) यूसुफ़ हूं। अ़र्ज़ की : या नबियल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! **ज़ुलैख़ा** के साथ आप का वाक़िआ़ अ़जीब है। फ़रमाया : **मक़ामे अब्वा** पर आ'राबिय्या के साथ होने वाला आप का वाक़िआ़ अ़जीब तर (या'नी ज़ियादा अ़जीब) है।

(इह़याउल उ़लूम, जि. 3, स. 130 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم

www.dawateislami.net

देखा आप ने ! ह़ज के मुबारक सफ़र में शैत़ान किस त़रह़ ह़ाजियों को गुनाहों में फंसाने की तरकीबें करता है मगर कुरबान जाइये आ़शिक़ाने रसूल के पाकीज़ा किर्दार पर कि वोह शैत़ान के हर वार को नाकाम बनाते चले जाते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **सुलैमान बिन यसार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने ख़ुद चल कर आने वाली **बुर्क़अ़पोश आ'राबिय्या** को ठुकरा दिया बल्कि **ख़ौफ़े ख़ुदा** से रोना धोना मचा दिया, जिस के नतीजे में ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ह़ौसला अफ्ज़ाई फ़रमाई । बहर ह़ाल दुन्या व आख़िरत की भलाई इसी में है कि जिन्से मुख़ालिफ़ (या'नी मर्द का औ़रत और औ़रत का मर्द) लाख दिल लुभाए और गुनाह पर उक्साए मगर इन्सान को चाहिये कि हरगिज़ शैत़ान के दामे तज़वीर (या'नी धोके) में न आए, हर सूरत में उस के चुंगल से ख़ुद को बचाए और ख़ूब अज्रो सवाब कमाए ।

आख़िरी उ़म्र है क्या रोनक़े दुन्या देखूं
अब फ़क़त़ एक ही धुन है कि मदीना देखूं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾82﴿ ब कसरत रोने वाला ह़ाजी

ह़ज़रते सय्यिदुना मुख़व्वल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना बुहैम इ़जली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی ने मुझ से फ़रमाया : मेरा **ह़ज** का इरादा है किसी को मेरा रफ़ीक़े सफ़र बना दीजिये ।

चुनान्चे मैं ने अपने एक पड़ोसी को उन के साथ सफ़रे मदीना पर आमादा कर लिया। दूसरे दिन मेरा पड़ोसी मेरे पास आया और कहने लगा। मैं ह़ज़रते सय्यिदुना बुहैम के साथ नहीं जा सकता। मैं ने हैरत से कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने कूफ़ा भर में उन जैसा बा अख़्लाक़ आदमी नहीं देखा। आख़िर क्या वजह है कि तुम उन की रफ़ाक़त से ख़ुद को मह़रूम कर रहे हो ? वोह बोला : मैं ने सुना है कि वोह अकसर रोते रहते हैं, इस लिये उन के साथ मेरा सफ़र ख़ुश गवार नहीं रहेगा। मैं ने उस को समझाया कि येह बहुत अच्छे बुज़ुर्ग हैं, उन की सोह़बत اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये निहायत मन्फ़अ़त बख़्श होगी। वोह मान गया। जब सफ़र के लिये ऊंटों पर सामान लादा जाने लगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना बुहैम इजली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی एक दीवार के क़रीब बैठ कर रोने में मशग़ूल हो गए, ह़त्ता कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दाढ़ी मुबारक और सीना अश्कों से तर हो गया और **आंसू** ज़मीन पर टप टप गिरने लगे। मेरे पड़ोसी ने घबरा कर मुझ से कहा : अभी तो सफ़र की शुरूआ़त है और इन का ह़ाल येह है ख़ुदा जाने आगे क्या आ़लम होगा ! मैं ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुए कहा : घबराइये नहीं सफ़र का मुआ़मला है, हो सकता है बाल बच्चों की जुदाई में रो रहे हों और आगे चल कर क़रार आ जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना बुहैम इजली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی ने येह बात सुन ली और फ़रमाया : **वल्लाह** ! ऐसी बात नहीं, इस सफ़र के सबब मुझे "सफ़रे आख़िरत" याद आ गया। येह फ़रमाते ही

www.dawateislami.net

चीखें मार मार कर रोने लगे। पड़ौसी ने फिर परेशानी के आलम में मुझ से कहा : मैं इन के हमराह कैसे रह सकूंगा ? हां इन का सफ़र हज़रते सय्यिदुना **दावूद ताई** और सय्यिदुना **सलाम अबुल अह़वस** رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تعالٰی के साथ होना चाहिये क्यूंकि येह हर दो ह़ज़रात भी बहुत **रोते** हैं, उन के साथ इन की तरकीब ख़ूब रहेगी और मिल कर ख़ूब रोया करेंगे। मैं ने फिर पड़ौसी की हिम्मत बंधाई, आख़िरे कार वोह उन के साथ **सफ़रे मदीना** पर रवाना हो गया। **ह़ज़रते** सय्यिदुना मुख़व्वल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जब **ह़ज** से उन की वापसी हुई तो मैं अपने पड़ौसी ह़ाजी के पास गया, उस ने बताया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर दे, मैं ने इन जैसा आदमी कहीं नहीं देखा, ह़ालांकि मैं मालदार था फिर भी ग़रीब होने के बा वुजूद मुझ पर ख़ूब ख़र्च करते थे, बूढ़े होने के बा वुजूद रोज़े रखते, मुझ बेरोज़ा जवान के लिये खाना बनाते और मेरी बेह़द ख़िदमत किया करते थे। मैं ने कहा : आप तो इन के रोने के सबब परेशान होते थे अब क्या ज़ेह़्न है ? कहा : पहले पहल मैं बल्कि दीगर क़ाफ़िले वाले भी उन की रोने की कसरत से घबरा जाते थे मगर आहिस्ता आहिस्ता उन की सोह़बत की बरकत से हम पर भी रिक़्क़त त़ारी होने लगी और उन के साथ हम सब भी मिल कर रोते थे। **ह़ज़रते** सय्यिदुना **मुख़व्वल** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं : इस के बा'द मैं ह़ज़रते सय्यिदुना **बुहैम इजली** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی की

www.dawateislami.net

ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अपने पड़ौसी ह़ाजी के बारे में दर्याफ़्त किया तो फ़रमाया : बहुत अच्छा रफ़ीक़ (साथी) था, ज़िक्रुल्लाह और क़ुरआने करीम की तिलावत की कसरत करता था और उस के आंसूं बहुत जल्द बह जाया करते थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए। (البحر العميق ج ١ ص ٣٠٠ مُلَخّصًا)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

यादे नबिय्ये पाक में रोए जो उ़म्र भर
मौला मुझे तलाश उसी चश्मे तर की है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى محمَّد

(83) ह़ाजियों की ह़ैरत अंगेज़ ख़ैरख़्वाही

मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **ह़ज** का इरादा किया तो कई आ़शिक़ाने रसूल साथ चलने के लिये तय्यार हो गए, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सब से अख़राजात ले कर एक सन्दूक़ में डाल कर मह़फ़ूज़ कर लिये, फिर अपने पल्ले से सब के लिये सुवारियां किराये पर लीं और क़ाफ़िला सूए ह़रम रवां दवां हो गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क़ाफ़िले वालों को अपनी जेबे ख़ास से उ़म्दा से उ़म्दा खाना खिलाते रहे। जब येह क़ाफ़िला बग़दाद शरीफ़ पहुंचा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सब के लिये बेहतरीन लिबास और खाने पीने का कसीर सामान

www.dawateislami.net

ख़रीदा। क़ाफ़िला मन्ज़िलें तै करता हुवा बिल आख़िर मदीनतुल मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا हाज़िर हो गया। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने हर हर रफ़ीक़ को मदीनतुल मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से उन के घर वालों की फ़रमाइश के मुताबिक़ चीज़ें ख़रीद कर इनायत फ़रमाई। इस के बा'द क़ाफ़िला मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيْماً وَّ تَكْرِيماً की पुरनूर फ़ज़ाओं में दाख़िल हुवा और **मनासिके ह़ज** अदा किये। ह़ज के बा'द यहां से भी अपने पल्ले से सब को तबर्रुकात वग़ैरा ख़रीद कर दिये। वापसी में भी रास्ते भर आ़शिक़ाने रसूल पर दिल खोल कर ख़र्च किया। जब क़ाफ़िला अपने वत़न पहुंच गया तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन के घरों पर ह़स्बे ज़रूरत पलस्तर वग़ैरा करवा कर चूना करवा दिया। तीन दिन बा'द अपने क़ाफ़िले के तमाम ह़ाजियों की दा'वत की और बत़ौरे सोग़ात उन्हें बेहतरीन मल्बूसात अ़ता किये, जब सब खाना खा चुके तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सन्दूक़ मंगवा कर खोला और हर एक ह़ाजी की रक़म जूं की तूं वापस कर दी। (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 254 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

धारे चलते हैं अ़त़ा के वोह है क़त़रा तेरा
तारे खिलते हैं सख़ा के वोह है ज़र्रा तेरा

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾84﴿ इमाम शाफ़ेई की सफ़रे ह़रम में सख़ावत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की सख़ावत बे मिस्ल थी, और क्यूं न हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : **अल्लाह** तआ़ला ने अपने हर वली को अच्छे अख़्लाक़ और सख़ावत की फ़ित़रत इनायत फ़रमाई है । (تاریخ مدینہ دمشق ج ۵۱ ص ۴۷۲) मन्क़ूल है, सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى जब (यमन के शहर) सनआ़ से मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ आए तो आप के पास दस हज़ार दराहिम थे, मक्के शरीफ़ के बाहर ख़ैमा लगाया और चादर बिछा कर सारी रक़म उस पर डाल दी, जो भी आता उसे मुठ्ठी भर कर अ़त़ा फ़रमा देते, जब ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी तो वोह चादर झाड़ दी, उस पर एक दिरहम भी बाक़ी न बचा था । (इह़याउल उ़लूम, जि. 3, स. 310 मुलख़्ख़सन)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम !
हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾85﴿ मैं क्यूं न रोऊं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बाक़िर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَادِر जब ह़ज के लिये मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا तशरीफ़ ले गए और मस्जिदुल ह़राम में दाख़िल हुए तो बैतुल्लाह शरीफ़ को देखा

www.dawateislami.net

तो रोने लगे ह़त्ता कि रोने में आप की आवाज़ बुलन्द हो गई। किसी ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! सब लोगों की नज़रें आप की त़रफ़ लग गई हैं, इस क़दर ज़ोर से गिर्या व ज़ारी न फ़रमाइये। फ़रमाया : "क्यूं ना रोऊं ! शायद **अल्लाह** तआ़ला मेरे रोने के सबब मुझ पर रह़मत की नज़र फ़रमा दे और मैं बरोज़े क़ियामत उस की बारगाह में काम्याब हो जाऊं।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने त़वाफ़ किया और "मक़ामे इब्राहीम" पर नमाज़ पढ़ी जब सजदे से सर उठाया तो सजदे की जगह आंसूंओं से तर थी। (رَوضُ الرِّياحين ص۱۱۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم

अरे ज़ाइरे मदीना ! तू ख़ुशी से हंस रहा है
दिले ग़मज़दा जो पाता तो कुछ और बात होती

(वसाइले बख़्शिश, स. 308)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿86﴾ लब्बैक कहते ही बेहोश हो गए

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जब अ़ज़्मे ह़ज्जे बैतुल्लाह किया और एह़राम बांधा तो चेहरए मुबारका ज़र्द हो गया और **लब्बैक** न कह सके। लोगों ने अ़र्ज़ की : आप **लब्बैक** नहीं पढते ? फ़रमाया : मुझे डर है कहीं जवाब में "**ला लब्बैक**" न कह दिया जाए ! अ़र्ज़ की गई : एह़राम बांध कर **लब्बैक** कहना ज़रूरी है। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने

www.dawateislami.net

लब्बैक पढ़ी तो **बेहोश** हो कर सुवारी पर से गिर पड़े और इख़्तितामे ह़ज तक येही सूरत रही कि जब भी **लब्बैक** कहते बेहोश हो जाते। (تہذیب التہذیب ج ٥ ص ٦٧٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उंगलियां कानों में दे दे के सुना करते हैं
ख़ल्वते दिल में अ़जब शोर है बर्पा तेरा (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾87﴿ अपाहज ह़ाजी

ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के रास्ते में एक **अपाहज ह़ाजी** को देखा जो घिसट कर चल रहा था, मैं ने उस से पूछा : तुम कहां से आए हो ? कहने लगा : समरक़न्द से। मैं ने फिर पूछा : कितना अ़र्सा हुवा वहां से चले हुए ? जवाब दिया : दस बरस से ज़ियादा हो गए हैं। मैं बड़े तअ़ज्जुब से उस को देखने लगा, इस पर वोह बोला : **ऐ शक़ीक़** (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ! क्या देख रहे हो ? मैं ने कहा : तुम्हारी कमज़ोरी और सफ़र की दराज़ी ने मुझे मुतअ़ज्जिब कर दिया। कहने लगा : ऐ शक़ीक़ ! सफ़र की दूरी को मेरा शौक़ (या'नी इ़श्क़) क़रीब कर देगा और मेरी कमज़ोरी का सहारा मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ है। ऐ शक़ीक़ ! तुम एक ज़ईफ़ (या'नी कमज़ोर) बन्दे पर तअ़ज्जुब कर रहे हो ! इस को तो इस का मालिक عَزَّوَجَلَّ चला रहा है।

www.dawateislami.net

ना तुवानी का अलम हम ज़ो'फ़ा को क्या हो !

हाथ पकड़े हुए मौला की तुवानाई है (ज़ौक़े ना'त)

फिर उस ने दो अ़रबी अश्आ़र पढ़े जिन का तर्जमा येह है :

(1)......ऐ मेरे आक़ा عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी ज़ियारत को आ रहा हूं और इश्क़ की मन्ज़िलें कठिन हैं, लेकिन शौक़ (इश्क़) उस शख़्स की मदद किया करता है जिस की माल मदद नहीं करता।

(2)......वोह हरगिज़ आ़शिक़ नहीं जिस को रास्ते की हलाकत का ख़ौफ़ हो और न ही वोह आ़शिक़ है जिस को रास्तों की सख़्ती ने चलने से रोक दिया। (رَوضُ الرَّیاحین ص۱۲۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हम को तो अपने साए में आराम ही से लाए

हिले बहाने वालों को येह राह डर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعالٰی علٰی محمَّد

﴾88﴿ ईदे क़ुरबान में जान क़ुरबान कर दी

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि मैं एक क़ाफ़िले के हमराह ह़ज्जे बैतुल्लाह शरीफ़ के लिये जा रहा था, रास्ते में एक नौजवान ह़ाजी देखा जो बिग़ैर ज़ादे राह पैदल चल रहा था। मैं ने उस को सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दिया। मैं ने पूछा : ऐ नौ जवान ! कहां से आए हो ? उस

www.dawateislami.net

ने जवाब दिया : उसी (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) के पास से। पूछा : कहां जा रहे हो ? कहा : उसी (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) के पास। पूछा : ज़ादे राह (या'नी सामाने सफ़र) कहां है ? बोला : उसी (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) के ज़िम्मए करम पर है। मैं ने कहा : येह त़वील रास्ता बिग़ैर तोशे (या'नी खाने पीने) के त़ै नहीं होगा, तेरे पास कुछ है भी ? बोला : जी हां, मैं ने घर से निकलते वक़्त **पांच हुरूफ़** ज़ादे राह के त़ौर पर ले लिये थे। पूछा : वोह पांच हुरूफ़ कौन से हैं ? उस ने कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान : كٓهٰيٰعٓصٓ. पूछा : इन हुरूफ़ से क्या मुराद है ? कहा : **काफ़** से "काफ़ी" या'नी किफ़ायत करने वाला, **हा** से "हादी" या'नी हिदायत करने वाला, **या** से पनाह देने वाला, **ऐन** से "आ़लिम" या'नी जानने वाला, **स़ाद** से "सादिक़" या'नी सच्चा। तो जिस का रफ़ीक़ काफ़ी व हादी व मुअवी (या'नी पनाह देने वाला) व आ़लिम और सादिक़ हो वोह कैसे ज़ाएअ़ या परेशान हो सकता है और उसे क्या ज़रूरत है कि ज़ादे राह और पानी उठाए फिरे ! ह़ज़रते सय्यिदुना **मालिक** बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि उस **ह़ाजी** का कलाम सुन कर मैं ने उस को अपनी क़मीस पेश की। उस ने क़बूल करने से इन्कार करते हुए कहा : "ऐ शैख़ ! दुन्या की क़मीस से बरह्‌ना रहना बेहतर है क्यूंकि दुन्या की ह़लाल चीज़ों पर ह़िसाब और ह़राम चीज़ों पर अ़ज़ाब है।" जब रात का अन्धेरा छा गया तो उस **ह़ाजी** ने मुंह आस्मान की त़रफ़ उठाया और इस त़रह़ "मुनाजात" करने लगा : "ऐ वोह पाक ज़ात ! जिस को बन्दों की इत़ाअ़त से

खुशी होती है और बन्दों के गुनाहों से कुछ नुक़्सान नहीं होता, मुझे वोह चीज़ या'नी इबादत अ़ता फ़रमा जिस से तुझे खुशी होती है और वोह चीज़ या'नी गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे जिस से तेरा कोई नुक़्सान नहीं।'' जब लोगों ने एह़राम बांध कर ''लब्बैक'' कही तो वोह ख़ामोश था, मैं ने पूछा : तुम लब्बैक क्यूं नहीं कहते ? उस ने कहा : मुझे डर है कि मैं कहूं ''**लब्बैक**'' और वोह फ़रमा दे : ''لَالَبَّیۡکَ وَلَا سَعۡدَیۡکَ وَلَا اَسۡمَعُ کَلَامَکَ وَلَااَنۡظُرُ اِلَیۡکَ'' ''या'नी न तेरी लब्बैक क़बूल है और न सा'दैक और न मैं तेरा कलाम सुनूं और न तेरी त़रफ़ देखूं। फिर वोह चला गया। मैं ने उस **ह़ाजी** को सारे रास्ते में फिर कहीं न देखा, बिल आख़िर **मिना** शरीफ़ में वोह नज़र आ गया उस वक़्त वोह कुछ अ़रबी अश्आ़र पढ़ रहा था जिन का तर्जमा येह है : ﴾1﴿......बेशक वोह ह़बीब (या'नी प्यारा) जिस को मेरा ख़ून बहना पसन्दीदा है तो मेरा ख़ून उस के लिये ह़लाल है ह़रम में भी और ह़रम के बाहर भी ﴾2﴿......ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मेरी रूह़ को इ़ल्म हो जाए कि वोह किस ज़ाते अक़्दस से मह़ब्बत करती है तो वोह क़दम के बजाए सर के बल खड़ी हो जाए ﴾3﴿......ऐ मलामत करने वाले ! उस के इ़श्क़ पर मुझे मलामत न कर कि अगर तुझे वोह नज़र आ जाए जो मैं देखता हूं तो तू कभी भी मुझे मलामत न करे ﴾4﴿ लोगों ने ई़द के दिन भेड़, बकरियों और ऊंटों की कुरबानी की और मह़बूब ने उस दिन मेरी जान की कुरबानी की ﴾5﴿......लोगों का ह़ज हुवा है और मेरा ह़ज मेरे मह़बूब के पास जाना है। लोगों ने कुरबानियां हदिया कीं और मैं ने अपनी जान और अपने ख़ून की कुरबानी का तोह़फ़ा पेश किया।

www.dawateislami.net

अश्आ़र पढ़ने के बा'द वोह गिड़गिड़ा कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "**ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! लोगों ने कुरबानियां कीं और तेरा कुर्ब ह़ासिल किया और मेरे पास तो कुछ भी नहीं जिस के साथ तेरा कुर्ब (या'नी नज़्दीकी) ह़ासिल कर सकूं सिवाए अपनी जान के, तो इसी को तेरी बारगाह में नज़्र करता हूं तू इसे क़बूल फ़रमा ।" येह कहने के बा'द उस **ह़ाजी** ने एक चीख़ मारी, ज़मीन पर गिरा और उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई । ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : फिर यकायक ग़ैब से एक आवाज़ गूंज उठी : **येह अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का प्यारा है जो इ़श्क़े इलाही की तल्वार से क़त्ल हुवा है ।** फिर मैं ने उस ख़ुश नसीब **ह़ाजी** की तजहीज़ो तक्फ़ीन की । (روض الرّياحين ص ٩٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।** اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

क्या नज़्र करूं प्यारे ! शै कौन सी मेरी है
येह रूह़ भी तेरी है, येह जान भी तेरी है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾89﴿ पुर असरार ह़ाजी

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : मैं ने मैदाने अ़रफ़ात में एक **ह़ाजी साह़िब** को देखा जो कि रो रो कर अ़रबी में येह अश्आ़र पढ़ रहे थे ।

तर्जमा : ﴾1﴿......वोह ज़ात हर ऐ़ब से पाक है, अगर हम अपनी आंखों से कांटों और गर्म सूइयों पर भी उस को सजदा करें तो फिर

www.dawateislami.net

मस्जिदे ख़ैफ़ | मस्जिदे जिन्न | मस्जिदे जिइर्रानह | मस्जिदे निमरह | मस्जिदे ग़मामह | मस्जिदे जुमुअह | मस्जिदे शैख़ैन

मक़ामे इब्राहीम | हजरे अस्वद | ग़ारे सौर | ग़ारे हिरा | जबले उहुद | मेह़राबे नबवी | मिम्बरे रसूल

भी उस की ने'मतों के ह़क़ का दसवां ह़िस्सा बल्कि दसवें का भी दसवां नहीं नहीं बल्कि उस का भी दसवां ह़िस्सा अदा न हो

﴾2﴿......ऐ पाक ज़ात ! मैं ने कितनी मरतबा लग़्ज़िशें (या'नी ख़त़ाएं) कीं और कभी भी अपनी ना फ़रमानियों में तुझे याद न किया मगर ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! तू हमेशा मुझे दर पर्दा याद फ़रमाता रहा

﴾3﴿......मैं ने न जाने कितनी ही मरतबा गुनाहों के वक़्त जहालत से अपना पर्दा फ़ाश किया मगर तूने हमेशा मुझ पर लुत़्फ़ो करम ही किया और अपने ह़िल्म के साथ मेरी पर्दापोशी फ़रमाई ।

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : फिर वोह मेरी नज़रों से ग़ाइब हो गए । मैं ने ह़ाजियों से पूछा कि येह ह़ाजी साह़िब कौन थे ? तो किसी ने बताया कि येह **ह़ज़रते अबू उ़बैद ख़वास** عليه رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد थे । इन के "ख़वास" (या'नी ख़ूबियां) में से एक येह भी है कि इन्हों ने सत्तर बरस तक **ख़ौफ़े ख़ुदा** के सबब आस्मान की त़रफ़ मुंह नहीं उठाया । (ऐज़न, स. 98)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बे नवा, मुफ़्लिसो मोह़ताज व गदा कौन ? "कि मैं"
साह़िबे जूदो करम वस्फ़ है किस का ? "तेरा"

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दुन्या के लिये माल जम्अ़ करने वाले बे अ़क़्ल हैं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : दुन्या उस का घर है जिस का कोई घर न हो और उस का माल है जिस का कोई माल न हो और इस के लिये वोह जम्अ़ करता है जिस में अ़क़्ल न हो।

(مشکاۃ المصابیح، 2/250، حدیث:5211)